बच्चों के लिए आज्ञा

(6:1-3)

कार चलाने की इच्छा रखने वाले बहुत से लोग जो गाड़ी चलाना चाहते हैं, पहले ड्राइविंग सीखते हैं। उन्हें कार चलाना, ट्रैफिक के नियमों तथा सड़क पर होने वाली दुर्घटनाओं के बारे में सीखना आवश्यक होता है। ड्राइविंग सीखने के लिए लोग सिखाने वाले के साथ सड़क पर गाड़ी चलाकर कुछ व्यावहारिक बातें सीखते हैं।

मान लो कि एक दिन गाड़ी सीखने वाला सिखाने वाले से कहता है, ''मैं लाल बज़ी होने पर गाड़ी नहीं रोकूंगा। मुझे यह अच्छा नहीं लगता कि कोई मुझसे कुछ करने के लिए कहे। मुझे लाल रंग अच्छा नहीं लगता, और तुमने जो कुछ भी कहा,मुझे उसकी परवाह नहीं है। मैं लाल बज़ी पर गाड़ी नहीं रोकूंगा।'' वह व्यज़्ति गाड़ी चलाने के लिए तैयार नहीं होगा, ज़्योंकि उसने सिखाने वाले या कानून के प्रति सज़्मान दिखाना नहीं सीखा है।

किसी को गाड़ी चलाना सिखाने की तरह ही, बल्कि उससे भी महत्वपूर्ण बच्चों को जीवन जाच सिखाना माता-पिता का कार्य है। आरज़्भ करने के लिए पौलुस के इन शज़्दों में अच्छी बात मिलती है:

> हे बालको, प्रभु में अपने माता-पिता के आज्ञाकारी बनो, ज़्योंकि यह उचित है। अपनी माता और पिता का आदर कर (यह पहिली आज्ञा है, जिस के साथ प्रतिज्ञा भी है)। कि तेरा भला हो, और तू धरती पर बहुत दिन जीवित रहे। और हे बच्चे वालो अपने बच्चों को रिस न दिलाओ परन्तु प्रभु की शिक्षा, और चितावनी देते हुए, उन का पालन-पोषण करो (6:1-4)।

सफलतापूर्वक प्रशिक्षण इसी बात पर ज़ोर देने से आरज़्भ होना चाहिए कि बाइबल ज़्या कहती है। बच्चों और माता-पिता को परमेश्वर की बुलाहट के साथ जीवन जीना चाहिए। परमेश्वर बच्चों को आदरपूर्वक आज्ञापालन के लिए पुकारता है। परमेश्वर माता-पिता को ईश्वरीय अगुआई देने के लिए पुकारता है।

बच्चों और माता-पिता को इस बात का अहसास होना चाहिए कि यह काम आसान नहीं होगा। माता-पिता और बच्चे एक युद्ध लड़ रहे हैं, यह युद्ध एक दूसरे के विरुद्ध नहीं बल्कि शैतान के विरुद्ध है। परमेश्वर इस युद्ध को लड़ने के लिए केवल प्रभावशाली युज़्ति ही देता है। परमेश्वर की योजना के अनुसार काम करने वाले लोग सफलता की उज़्मीद कर सकते हैं। परमेश्वर की योजना को गंभीरतापूर्वक न लेने वाले असफल होने की अपेक्षा कर

सकते हैं।

मुझे नहीं लगता कि हम में से कोई इस युद्ध को हारना चाहता है, इसलिए आइए घर के लिए परमेश्वर की योजना को देखते हैं। इस पाठ में हम इस बात पर ध्यान देंगे कि 6:1-3 में पौलुस ने बच्चों के लिए ज़्या कहा है। हम इसे इस प्रकार संक्षिप्त कर सकते हैं: *परमेश्वर बच्चों को आदरपूर्वक आज्ञा पालन के लिए बुलाता है।*

परमेश्वर बच्चों को अपने माता-पिता का आदर करने के लिए बुलाता है

6:2 में आदर के लिए आवश्यकता पर ज़ोर दिया गया है: ''अपनी माता और पिता का आदर कर।'' बच्चों के लिए यह नसीहत उम्र भर के लिए है आप बहुत छोटे हों और अपने माता-पिता के साथ रह रहे हों, या आप स्वयं माता-पिता हों और आपका परिवार हो, तो भी अपने माता-पिता का आदर करना आपकी ज़िम्मेदारी है।

''आदर'' के लिए यूनानी शब्द *timao* का अर्थ है ''मूल्यवान जानना, महत्व देना, सम्मान करना।'' इसका अर्थ किसी के साथ ऐसे व्यवहार करना है जिससे यह पता चले कि आप उनका बहुत आदर करते हैं। इसका अर्थ अपने माता-पिता को अपने जीवन में परमेश्वर द्वारा दी गई उनकी भूमिका के कारण महत्व देना है।

बचपन में मैं कभी-कभी अपने माता-पिता को उतना महत्व नहीं देता था, जितना मुझे देना चाहिए था, विशेषकर जब वे मुझसे मित्रों के साथ पीज़ा खाने के लिए बाहर जाने के बजाय घर रहकर स्कूल का काम करने के लिए कहते थे। मैं दुखी होता था, लेकिन मैं अपने मम्मी-डैडी से प्रेम करता था। समय बीतने के साथ, अपने जीवन में उनकी भूमिका के कारण मैं उन्हें ज्यादा से ज्यादा सम्मान देने लगा।

माता-पिता को परमेश्वर द्वारा दी गई भूमिका ज़्या है ? 6:4 में हम इस कार्य को देखते हैं: ''बच्चों को ... प्रभु की शिक्षा, और चेतावनी देते हुए, उनका पालन पोषण'' करना। परमेश्वर माता-पिता को बच्चों के लिए ईश्वरीय अगुवे होने के लिए प्राथमिक जिम्मेदारी देता है। माता-पिता छोटी-छोटी बातों में जैसे मित्रों के साथ बाहर जाने के बजाय घर का काम करने में अगुआई देते हैं, परन्तु इससे भी महत्वपूर्ण यह है कि माता-पिता परमेश्वर की ओर बच्चों को लेकर चलते हैं।

> उसने तो याकूब में एक चितौनी ठहराई, और इस्राएल में एक व्यवस्था चलाई, जिसके विषय में उसने हमारे पितरों को आज्ञा दी, कि तुम इन्हें अपने अपने लड़के बालों को बताना; कि आनेवाली पीढ़ी के लोग, अर्थात जो लड़के बाले उत्पन्न होने वाले हैं, वे इन्हें जानें; और अपने-अपने लड़के बालों से इनका बखान करने में उद्यत हों, और ईश्वर के बड़े कामों को भूल न जाएं, परन्तु उसकी आज्ञाओं का पालन करते रहें (भजन संहिता 78:5-7)।

बच्चों के लिए अपने माता-पिता का आदर करना ज़्यों आवश्यक है ? ज़्योंकि परमेश्वर

माता-पिता को अपने लिए एक वज़्ता, परमेश्वर की कहानी बताने वाले और परमेश्वर की आज्ञाओं के सिखाने वाले के रूप में देखता है।

हमें अपने माता-पिता का सज़्मान करना चाहिए ज़्योंकि उनके हाथ में विश्वास की छड़ी है, और परमेश्वर ने उन्हें यह छड़ी हमें सौंपने की जिज़्मेदारी दी है। यह आवश्यक नहीं कि माता-पिता उस ज़िज़्मेदारी को पूरा कर पाएं। कभी-कभी वे उस छड़ी को खो देते हैं, इसलिए उनके लिए प्रार्थना करें। अपने माता-पिता का सज़्मान करके परमेश्वर का आदर करें। वही करें जो परमेश्वर आप से चाहता है कि आप करें।

कुछ नवयुवक और कुछ नौजवान बच्चे अपने माता-पिता के साथ खिड़की के नीचे की देहलीज पर धूल जैसा व्यवहार करते हैं। धूल का महत्व नहीं होता; यह कष्ट देने वाली और आंख का कांटा होती है। पौलुस ने हमें चेतावनी दी कि हमारा व्यवहार अपने माता-पिता के प्रति ऐसा नहीं होना चाहिए। जो बच्चा यह सोचता है कि उसके माता-पिता केवल समस्या ही हैं,वह जीवन से अधिक कुछ नहीं पाएगा। बाइबल कहती है, ''अपने माता और पिता का आदर कर ... कि तेरा भला हो, और तू धरती पर बहुत दिन जीवित रहे''(6:2,3)।

पौलुस ने माता-पिता का आदर करने के दो कारण बताए। पहला, ''कि तेरा भला हो।''''भला'' के लिए यूनानी शज़्द *eu* बहुत छोटा सा है, अंग्रेज़ी में इसके लिए''eulogy'' शज़्द है, जिसका अर्थ किसी की प्रशंसा करना है। पौलुस के दिनों में, इस छोटे से शज़्द का इस्तेमाल किसी को सलाम करने और उन्हें यह बताने के लिए किया जाता था, ''शाबाश! बहुत अच्छे!'' जब आप अपने माता-पिता का आदर करते हैं, तो आप जान सकते हैं कि परमेश्वर आपसे ज़्या कह रहा है, ''शाबाश! बहुत अच्छे!''

अपने माता-पिता का आदर करने का एक और कारण इन शज़्दों में मिलता है: ''तू धरती पर बहुत दिन जीवित रहे।'' देखें कि इसकी व्याज़्या गैरी समाली और जॉन ट्रेंट ने कैसे की है:

> परमेश्वर प्रतिज्ञा करता है कि जो अपने माता पिता का आदर करता है वह वास्तव में जीवन पाता है! यह कैसे हो सकता है? बहुत से डॉज़्टरों, सलाहकारों, या [प्रचारकों] से पूछें। उन्होंने अपने दज़्तरों में उन लोगों को बुरे हाल देखा है जिन्होंने अपने माता पिता का अपमान किया, जिस कारण उनकी सामर्थ चली गई।
>
> ... जब लोग क्रोध, कड़वाहट, या नाराजगी के कारण अपने माता पिता से घृणा करना या उनका अपमान करना चुनते हैं, तो उन्हें इसका आत्मिक, भावनात्मक और शारीरिक दाम चुकाना पड़ता है।[1]

जब आप अपने माता-पिता का आदर करते हैं तो आप उन्हें बहुत ऊंचाई पर बिठाते हैं। परमेश्वर कहता है कि ऐसा व्यवहार पृथ्वी पर आपके जीवन की गुणवज़ा को बढ़ाएगा।

बच्चे अपने माता-पिता का आदर कैसे कर सकते हैं? वे बच्चे जो अभी अपने माता-पिता के साथ घर में रह रहे हैं, इन विचारों पर ध्यान दें:

1. *परमेश्वर द्वारा अपने माता-पिता को दी गई भूमिका का सज़्मान करें।* वे वास्तव

में आपकी भलाई के लिए परमेश्वर का दान हैं।

2. *उनके परिप्रेक्ष्य से जीवन को देखने की कोशिश करें।* उनके चेहरे पर तनाव की स्थिति का विचार करें। उनके मन की बातों पर विचार करें। जब आपके पिता कठिन कार्य करते हैं या माता अकेली होती हैं तो उस पर विचार करें। अपने माता-पिता की कुछ आवश्यकताओं को देखें और उन्हें पूरा करना सीखें।

3. *माता-पिता से परामर्श लें।* मैं जानता हूं कि बहुत से नवयुवक ऐसा करना नहीं चाहते, परन्तु परिपज़्वता का चिह्न *स्वेच्छा से* किसी की सलाह मांगने के लिए तैयार होना है। आपके माता-पिता यह जानते हैं और वे आपके प्रश्न को महत्व देंगे।

4. *अपने माता-पिता की तारीफ करें।* उनके लिए खाना तैयार करें। उनके लिए कुछ ऐसा करें जिससे उनका बोझ कम हो। आपके काम से उन्हें पता चले कि आप उन्हें कितना महत्व देते हैं।

5. *उनके लिए प्रार्थना करें।* ज़्या आप अपने माता-पिता के लिए प्रार्थना करते हैं? मैं जानता हूं कि यदि आप ऐसा करते हैं तो इससे परमेश्वर प्रसन्न होगा।

6. *अपने माता-पिता को बताएं कि आप उनसे प्रेम करते हैं।* कितनी देर पहले आपने अपने मज़्मी या डैडी से गले मिलकर उनसे कहा था, ''मैं आपसे प्रेम करता हूं''?

आप में से जो लोग वयस्क हैं, उन्हें चाहिए कि जब माता-पिता आपके साथ हों तो आप उनका आदर करने का तरीका ढूंढ़ें। बुढ़ापे में उनका आदर और देखभाल करें। इसका अर्थ है कि आप उन्हें नज़रअन्दाज न करें और उन्हें जीवन ऐसे बिताने दें जैसे आप उनके बच्चे न हों। उन्हें आदर देने और दृढ़ करने के रास्ते ढूंढ़ें। उनका आदर वैसे ही करें जैसे उनके चले जाने के बाद किया जाएगा। ''अपने पिता और अपनी माता का आदर कर।''

परमेश्वर बच्चों को अपने माता-पिता की आज्ञा मानने के लिए पुकारता है

''हे बालको, प्रभु में अपने माता-पिता के आज्ञाकारी बनो, ज़्योंकि यह उचित है'' (6:1)। ''आज्ञाकारी'' (यू.: *hupakouo*) शज़्द दो विचारों ''सुनना'' और ''अधीन'' का मिश्रण है। इसमें यह माना जाता है कि कोई किसी दूसरे के अधिकार के अधीन है और उसे उस अधिकार वाले की सुनकर माननी चाहिए।

नीतिवचन 13:1 कहता है, ''बुद्धिमान पुत्र पिता की शिक्षा सुनाता है, परन्तु ठट्ठा करने वाला घुड़की को भी नहीं सुनता।'' बाइबल में आज्ञाकारिता की शिक्षा दी गई है, परन्तु आज्ञाकारिता आज के समय में प्रचलित नहीं है। हमारा समाज इसके विपरीत करने के लिए हम पर दबाव डालता है: ''अपने माता-पिता की न सुनो''; ''उन्हें मालूम नहीं है कि वे ज़्या बात कर रहे हैं।''

मैं ऐसे ही सोचता था। मेरी सोच मार्क ट्वेन से मिलती है, जिसने कहा, ''जब मैं चौदह वर्ष का था, तो मुझे लगता था कि मेरे पिता संसार के सबसे बुद्धू आदमी हैं, परन्तु इज़्कीस वर्ष का होते-होते, मुझे आश्चर्य हुआ कि उन्होंने सात वर्ष में कितना कुछ सीख

लिया था।'' निश्चय ही, मार्क ट्वेन यह बात मज़ाक में ही कह रहा था कि अंत में उसे समझ आ गई कि उसका पिता कितना बुद्धिमान था।

परमेश्वर बड़ा स्पष्ट है। वह नहीं चाहता कि बच्चे उसकी योजनाओं को न समझें: ''हे बालको, प्रभु में अपने माता-पिता के आज्ञाकारी बनो, ज़्योंकि यह उचित है।'' कभी-कभी हो सकता है कि आप अपने माता-पिता को न समझते हों या आप उनकी बातों से सहमत न हों। तो आपको ज़्या करना चाहिए? आपको चाहिए कि उनकी बात मान लें।

निकोल अपनी सहेली बैज़्की के साथ उसके घर गई। निकोल की मां ने उसे देखा और कहा, ''निकोल, अब ऊपर चल! तूने अपना कमरा कितना गंदा कर रखा है!''

''सॉरी, मज़्मी। मैं अभी ठीक कर देती हूं।''

निकोल और बैज़्की दोनों ऊपर गईं। बैज़्की ने कहा, ''तेरी मज़्मी को ज़्या हुआ है? तू ने उनकी बात सुन कैसे ली? मेरी मज़्मी तो मेरे किसी मित्र के सामने मुझे ऐसे डांटे, तो मैं तो उन्हें वैसे ही जवाब देती हूं!''

निकोल ने कुछ कपड़े उठाए और कहा, ''बैज़्की, गलती मेरी ही थी। मैंने उनसे कहा था कि सुबह मैं अपना कमरा साफ करके बाहर जाऊंगी। वह सही कह रही थी। इसके अलावा, पता है कि आज उनका मूड भी ठीक नहीं था।'' माता-पिता का आदर यही तो है।

घर में दुखी होकर रहने का ढंग घर के लिए परमेश्वर की योजना को नज़रअन्दाज करना, यह भूल जाना कि परमेश्वर एक बच्चे के रूप में हम से ज़्या अपेक्षा करता है और अपने माता-पिता के साथ युद्ध का ऐलान करना है। परिवार में यदि कोई भी व्यज़्ति स्वार्थी होने का फैसला कर लेता है, तो आपका घर नरक बन जाएगा। दूसरी ओर, यदि आप घर को स्वर्ग बनाना चाहते हैं, तो इस में परमेश्वर की योजना को लागू करें।

''हे बालको, अपने माता-पिता के आज्ञाकारी बनो'' की आज्ञा घर के छोटे-बड़े सब बच्चों के लिए है। परमेश्वर आपको बिना जवाब दिए, बिना कुड़कुड़ाए बल्कि आदर से अपने माता-पिता की आज्ञा मानने के लिए कहता है।

ध्यान दें कि बाइबल प्रभु यीशु के बारे में ज़्या बताती है। जब वह बारह वर्ष का था, ''वह उनके [अर्थात अपने माता-पिता के] साथ गया, और नासरत में आया, और उनके वश में रहा;'' (लूका 2:51)। ज़्या जानें उसे कहा जाता हो, ''यीशु, अपना कमरा साफ करे''; ''यीशु, अपना काम कर''; ''यीशु, स्कूल में अच्छे नज़्बर लेना''; ''यीशु, जा सो जा''; ''यीशु, लोगों के प्रति दयालु बन और बड़ों का आदर किया कर।'' मेरे विचार से हम भूल जाते हैं कि यीशु भी कभी बालक था। उसके माता-पिता थे जिनके द्वारा उसका पालन-पोषण हुआ, परन्तु यीशु आदरपूर्वक उनकी आज्ञा मानता था।

मैं नौजवानों को तीन प्रश्नों का जवाब देने के लिए कहता हूं,।

1. ज़्या आप आज्ञा मानकर अपने घर में शांति को बढ़ावा देते हैं, या सहयोग की कमी और आज्ञा न मानकर घर में ऊधम मचाते हैं।

2. ज़्या आप अपने माता-पिता की आज्ञा स्वेच्छा से मानते हैं, या शांति से रहने की कोशिश करते हैं?

3. अपने माता-पिता के साथ आपके व्यवहार से किसकी विजय हो रही है, शैतान की या प्रभु की?

सारांश

परमेश्वर बच्चों को माता-पिता जीवन के लिए तैयार होने के लिए देता है। माता-पिता की आज्ञा न मानना बच्चे की सबसे बड़ी भूल हो सकती है। हो सकता है कि यह गलती अभी बड़ी न लगे, परन्तु यदि यह माता-पिता के विरुद्ध है, तो यह परमेश्वर के वचन के विरुद्ध भी है और स्वयं उस बच्चे के विरुद्ध भी।

कई बार माता-पिता सही नहीं होते। उसके बारे में हम अगले पाठ में बात करेंगे। परन्तु फिर भी परमेश्वर बच्चों को अपने माता-पिता का सम्मान और आदर करने के लिए कहता है। उनके गलत व्यवहार का फैसला परमेश्वर को करने दें। आप अपने व्यवहार को ठीक रखें।

खुशहाल परिवार के लिए एकमात्र आशा परमेश्वर की योजना के अनुसार चलना है। केवल परमेश्वर ही आशा है। उसका वचन हमें मार्ग दिखाता है।

टिप्पणी

[1]गैरी समाले एण्ड जॉन ट्रेंट, *द ल्लेसिंग* (नैशविल्ले, टैनिसी: थॉमस नैल्सन पब्लिशर्स, 1986), 203.